कभी भी किसी एक मान्यता या भावभूमि से आबद्ध नहीं रह सके। समय के साथ अपनी कविताओं को जो गति निराला जी ने दी है उसने उनके काव्य में एक विशिष्ट प्रकार का सौन्दर्य संयोजन कर दिया है। काव्य की प्रवृत्ति के आधार उनकी रचनाएं रहस्यवादी, छायावादी, प्रगतिवादी और प्रयोगवादी इन स्वरूपों में वर्गीकृत है-

1.रहस्यवादी रचनाएं- ये रचनाएं निरालाजी की कवि जीवन की शैशवावस्था की कविताएं हैं। निरालाजी मूलतः छायावादी कवि माने जाते हैं। दार्शनिक मन विलास और कल्पनालोक की पर्यटक काव्य संवेदना निराला जी की रहस्यवादी कविताओं में प्राप्त होती है। किसी अलौकिक एवं परमसत्ता के प्रति आत्म समर्पण अथवा विस्मय या जिज्ञासा भाव रहस्यवाद कहलाता है। छायावाद और रहस्यवाद को स्पष्ट विभाजित करने वाली कोई पार्थक्य पंक्ति नहीं है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में -निरालाजी की रहस्य भावना पर स्वामी शंकराचार्य और स्वामी विवेकानन्द का गंभीर प्रभाव है। शंकराचार्य की अद्वैत भावना निराला जी का मूल दर्शन प्रतीत होती है। दूसरे शब्दों में निराला जी अद्वैतवादी हैं। तुम और मैं कविता इसी अद्वैत के मौलिक संस्कारों से पूर्णत- प्रभावित है।

2. छायावादी रचनाएं- छायावाद की वृहत्त्रयी में निराला जी की भी गणना की गई है। हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रारंभिक पौरोहित्य का श्रेय प्रसाद पंत और महादेवी के साथ निराला जी को भी दिया जाता है। छायावाद की प्रमुख विशेषताएं और प्रवृत्तियां निरालाजी के समूचे काव्य में वृहदांश में उपलब्ध होती हैं। अन्तस का प्रस्तुतीकरण, वैयक्तिकता का आग्रह, गीति संस्कार, वेदना का उद्वेलन, प्रकृति के प्रति नव्य दृष्टिकोण और तादात्म्य, स्थापन की उद्दाम लालसा, प्रेम और श्रृंगारिकता का काव्य के बहिरंग क्षेत्र में अभिनव परिवर्तन आदि जो विशिष्टताएं छायावाद की पूंजी हैं इसी पूंजी ने निराला जी के काव्य के एक बड़े अंश को सम्पन्नता दी है।

परिमल की अधिकांश कवितायें छायावादी हैं।

3. प्रगतिवादी रचनाएं- निरालाजी की काव्य चेतना का काल्पनिक लोक में बहुत दिनों तक मन नहीं लगा। छायावाद में जो पलायन वृत्ति थी-स्थितियों के साक्षात्कार से बचने की जो प्रवृत्ति थी उसने निरालाजी को यथार्थ के धरातल पर आने को प्रेरित किया। कविधर्म का निर्वहन भी यथार्थ के धरातल पर अपेक्षाकृत अधिक हो सकता था-साथ ही आघातों ने निराला जी के काल्पनिक प्रभाव को जर्जर कर देने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। संभवतः इन्हीं दो स्थितियों से प्रभावित होकर निरालाजी का झुकाव वर्ग भेद, बाह्याडंबर और रूढ़िग्रस्त समाज के चित्रांकन की ओर उन्मुख हुआ। अनामिका के द्वितीय भाग के पश्चात निरालाजी प्रगतिवाद की ओर उन्मुख हुए हैं। कुकुरमुत्ता की कथा में एक रूपक के माध्यम से निरालाजी ने विभिन्न वर्गीकरण वाले समाज की कथा दी है। भिक्षुक और विधवा जैसी कविताएं निरालाजी का प्रगतिवादी दृष्टिकोण प्रकट करती हैं।

4. प्रयोगवादी रचनाएं- निराला के कृतित्व के संदर्भ में प्रयोगवाद का वह अर्थ नहीं जो कि आज के महत्वपूर्ण काव्यांदोलन प्रयोगवाद का है। निरालाजी का प्रयोग परिपाटी विद्रोह और नवीनता के स्वागत का है। उनका प्रयोग शिल्प में नए-नए प्रयोग करने का प्रयोग है। कुकुरमुत्ता और बेला की अधिकांश कविताएं इसी प्रकार के प्रयोग का परिचय देती हैं।

सम-सामयिक समानधर्मा श्री सुमित्रानन्दन पंत ने अपने ग्रंथ छायावाद पुनर्मूल्यांकन में लिखा है- निरालाजी ने कृतित्व के अनेक पहलू है। सर्वप्रथम तो उनकी सबल बौद्धिक रचनाएं हैं जिनमें उनकी अद्वैत दृष्टि को अखण्ड तेज, असीम सौन्दर्य तथा निगूढ़ सांकेतिक कला वैभव है। यह उनके काव्य की ज्योतिर्मय भूमि है। वे अत्यंत हठी और अहमन्य होने के साथ अत्यंत भाव प्रवण और संवेदनशील तो थे ही इसलिए उनके हृदय में बाहरी भीतरी प्रभावों, व्यक्तिगत जीवन संघर्षों, महत्वकांक्षाओं के दंशों तथा प्रवेशों के साथ आशा-निराशा, आल्हाद-विषाद के ज्योति अंधकार का दुर्धर्ष उद्वेलन रहता था।

निराला के कृतित्व के संदर्भ में भावनागत व्यापकता, शिल्पगत नावीन्य, उदात्त प्रवणशीलता, अनुभूतिगत व्यापकता उनके वैशिष्ट्य बोध के परिचायक हैं। संघर्ष, युगविरोध अभाव और दुस्साहस के समुच्चय ने निराला की काव्य चेतना को अत्यधिक संपुष्ट किया है- एतदर्थ छायावादी कवियों में उनका स्थान स्वमेव ही उत्कृष्ट कोटि को संस्पर्श करता हुआ आज भी प्रासंगिक और महनीय है। ■